The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com

ख्याल गायकी के प्रमुख घरानों का वर्णन

संदीप राणा

शोधार्थी नेट
चौ0 च0 सिंह वि0वि0, मेरठ

सारांश

हिन्दुस्तानी संगीत में घरानों की एक समृद्ध परम्परा है। घराना परम्परा भारतीय संगीत की विशेषता है। वर्तमान समय में ख्याल गायन के पांच प्रमुख घराने माने जाते हैं। सा– ग्वालियर घराना, रे– आगरा घराना, ग–जयपुर घराना, म– किराना घराना, प– पटियाला घराना। ख्याल गायन परम्परा में ग्वालियर घराना सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। ख्याल गायकी के इस महान घराने का जन्म सदा रंग–अदारंग के शिष्य लखनऊ के निवासी श्री गुलाम रसूल द्वारा हुआ। गुलाम अब्बास खां साहब ने आगरा घराने की गायकी की महत्वपूर्ण सैद्धान्तिक व्याख्या की और गायकी का कलात्मक संघटन भी किया। गायन के क्षेत्र में मुख्यतः जयपुर घराने का आरम्भ करामत अली खां तथा मुबारक अली लखनऊ वाले से माना जाता है। जयपुर घराने में राग की बंदिश बहुत ही सौन्दर्यपूर्ण रीति से प्रस्तुत की जाती है। करीम खां साहब को किराना घराने की गायकी का जन्मदाता और लोकप्रिय गायक मानते हैं। पटियाला घराने की अली बख्श और फतेह अली की जोडी अलिया–फत्तू के नाम से भारतवर्ष में प्रसिद्ध रही।

Keywords:– ख्याल गायकी, ग्वालियर घराना, ख्याल गायकी ,आगरा घराना।

घराना हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की विशिष्ट शैली है। हिन्दुस्तानी संगीत में घरानों की एक समृद्ध परम्परा है। घराना परम्परा भारतीय संगीत की विशेषता है। ख्याल शैली के घरानों के उदय के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि ख्याल गायकी के घरानों का विकास विभिन्न रियासतों के राज्याश्रय में हुआ है। ''राज्याश्रय मिलने से विभिन्न प्रख्यात गायकों ने निश्चित होकर अपनी शैली की निरन्तर साधना करते हुए एक सुदीर्घ गुरू–शिष्य परम्परा को जन्म दिया था। अतः अपनी इस परम्परा को अधिकतर अपना नाम न देकर जिन रियासतों का राज्याश्रय उन्हें प्राप्त था, उन्ही रिसायतों के नाम से इन घरानों का नामकरण करते हुए इन्हें प्रसिद्धकर दिया। इस प्रकार ख्याल गायकी के अनेक घरानों का उदय हुआ। जिन्हें उनके राज्याश्रय स्थान अथवा साधना स्थली का नाम दिया गया है। वर्तमान समय में ख्याल गायन के पांच प्रमुख घराने माने जाते हैं। सा– ग्वालियर घराना, रे– आगरा घराना, ग–जयपुर घराना, म– किराना घराना, प– पटियाला घराना।''

सा– ग्वालियर घरानाः–

ख्याल गायन परम्परा में ग्वालियर घराना सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। ख्याल गायकी के इस महान घराने का जन्म सदा रंग–अदारंग के शिष्य लखनऊ के निवासी श्री गुलाम रसूल द्वारा हुआ। टप्पा गायकी के पुननिर्माता गुलाम नबी (मियां शोरी) गुलाम रसूल के पुत्र थे। गुलाम रसूल ने अपने भांजे नत्थन पीरबख्श (मक्खन खां) और शक्कर खां (बडे मुहम्मद खां के पिता) को ख्याल गायकी की शिक्षा दी। बडे मुहम्मद खां ग्वालियर दरबार में राज गायक बने। नत्थन पीरबख्श ने अपने लडके कादिर बख्श और उनके तीन पुत्रों हस्सू खां साहब, हद्दू खां साहब तथा नत्थू खां साहब को शिक्षा प्रदान की और ये तीनों भी ग्वालियर दरबार में राजगायक बने। हस्सू खां साहब, हद्दू खां साहब तथा नत्थू खां की गायन शैली अद्भुत थी। ''हस्सू हद्दू खां साहब की शिष्य परम्परा में बहुत से प्रतिष्ठित घरानेदार गायक और सुप्रसिद्ध शिष्य हुए। ग्वालियर घराने के प्रतिष्ठित संगीत और शानदार गायकी को हम आधुनिक ख्याल गायन के संगीत का महाकाव्य कहा जा सकता है। उसके महत्व तथा उसकी श्रेष्ठता में एक वैभव है और शानदार मर्यादा है। जिसका अनुमान केवल उसके संगीत प्रदर्शन से मिलता है। हस्सू खां साहब, हद्दू खां साहब तथा नत्थू खां साहब के वंशज निसार हुसैन खां साहब तथा रहमत खां साहब तथा उनकी शिष्य परम्परा में बाला गुरू जी, शंकर पण्डित जी, एकनाथ पण्डित जी बाबा दीक्षित

का नाम प्रमुख है। पण्डित शंकर पण्डित जी के नाम से ग्वालियर में शंकर गांधर्व विद्यालय है। पण्डित शंकर पण्डित जी के प्रमुख शिष्य एवं पुत्र पण्डित कृष्णराव शंकर पण्डित जी, राजा भैया पूछवाले, बालकृष्ण बुआ इचलरंजीकर इत्यादि थे। इनकी शिष्य परम्परा में पण्डित लक्ष्मण कृष्णराव पण्डित, पण्डित विष्णु दिगम्बर तथा पण्डित अनन्त मनोहर जोशी भी थे।''

''ग्वालियर घराने में प्रचलित तथा सम्पूर्ण जाति के रागों का प्रचलन है। जैसे अल्हैया बिलावत, यमन भैरव आदि। ग्वालियर घराने में जोरदार तथा खुली आवाज का गायन होता है। स्वरों का लगाव खडा तथा खुला रहता है। आवाज दबाना या छिपाना इस घराने में निषिद्ध है। आवाज के तीनों सप्तकों के लिए तैयार करने के लिए स्वर साधना पर बल दिया जाता है।''

''ग्वालियर घराने की ख्याल गायकी में ध्रुपद का स्पष्ट प्रभाव है। अष्टांग विस्तार में आलाप, बोल आलाप, बहलावे, ताने, बोल बांट की ताने गमक, खटकें, कण, मींड, सूत, मुर्की इत्यादि का प्रयोग शब्दों का स्पष्ट उच्चारण, बंदिश का महत्व तथा लयकारी के विभिन्न प्रकार इस परम्परा के आवश्यक अंग है। तीनों सप्तकों में समान बल देते हुए दानेदार सपाट तानें भी इस गायकी का प्रमुख गुण है। सपाट तानों के अतिरिक्त वक्र व पेचदार ताने भी प्रयुक्त होती है। इस लय में लय बहुत विलम्बित लय नही रखी जाती। इस गायकी में टप्पा अंग की गायकी विशेष रूप से प्रसिद्ध है। जयदेव के गीत गोविन्द की अष्टपदियों को भी ख्याल के समान गाया जाता है। उस्ताद हस्सू खां साहब तथा उस्ताद हद्दू खां साहब संस्कृत की अष्टपदियों को स्पष्ट एवं स्वर माधुर्य के साथ गाते थे।''

रे– आगरा घरानाः–

आधुनिक युग में गुलाम अब्बास खां साहब ने ही आगरा घराने की गायकी की महत्वपूर्ण सैद्धान्तिक व्याख्या की और गायकी का कलात्मक संघटन भी किया। जो आजकल आगरा गायकी कहते है। उन्होंने आगरा घराने के तीन प्रसिद्ध गायकों को घराने की पूर्ण शिक्षा प्रदान की। इनमें प्रमुख इनके सगे छोटे भाई जयपुर के कल्लन खां, मुम्बई के सुप्रसिद्ध ख्यालिये नत्थन खां तथा तीसरे आगरा घराने के सर्वश्रेष्ठ गायक एवं गुलाम अब्बास खां साहब के नाती उस्ताद फैयाज खां साहब। कल्लन खां साहब के सुपुत्र तसद्दुक खां साहब संगीत के असाधारण विद्वान तथा मुम्बई के विलायत हुसैन ने भी इनसे शिक्षा प्राप्त की थी। ''आगरा घराने की

शिष्य परम्परा में अच्छे तथा प्रतिशाभाली गायक हुए है। मथुरा के चन्दन चौबे ,गुलाम अब्बास खां के शिष्य थे। मथुरा के ही काले खां, सरस पिया भी आगरा घराने से सम्बन्धित थे। अतरौली के दरस पिया महबूब खां भी आगरा घराने के थे। उनके दोनों सुपुत्र अता हुसैन और बडे हुसैन भी इसी घराने से सम्बन्ध रखते थे। आगरे के बशीर खां और जाबरे के बशीर खां, श्री कृष्ण नारायण रतनजनकर, दिलीप चन्द्र बेदी, अताहुसैन, सुशील कुमार चौबे, स्वामी वल्लभदास, रजनीकान्त देसाई, सोहन सिंह तथा चण्डीगढ के प्रो0 यशपाल आगरा घराने के प्रमुख शिष्यगण है।''

आगरा घराने के प्रमुख उस्ताद फैयान खां साहब के गायन में आगरा घराने की गायन शैली अपनी पराकाष्ठा के उच्च शिखर पर विराजमान थी।

ग– जयपुर घरानाः–

''राजस्थान की कलात्मक भूमि एवं राजधानी जयपुर का संगीत के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण स्थान था। जयपुर जिसका प्राचीन नाम जयनगर था, आज भी एक सुन्दर शहर है। जयपुर राज्य के कलाकारों का गुणीजनखाना कहकर सम्बोधित किया जाता है और यह गुणीजनखाना में आदर–सम्मान पाते थे। राजा मानसिंह तथा उनके छोटे भाई माधो सिंह दोनों ही नृत्य संगीत तथा अन्य कलाओं का शौक था।''

जयपुर घराने में हरिप्रसाद तथा हनुमान प्रसाद अच्छे संगीतज्ञ थे।गायन के क्षेत्र में मुख्यतः जयपुर घराने का आरम्भ करामत अली खां तथा मुबारक अली लखनऊ वाले से माना जाता है।

आवाज का विशिष्ट आकार युक्त इस घराने का विशेष तन्त्र माना गया है। आलाप, मींड, गमक, मुश्किल तान इनमें कोई अन्तर दिखाई नही देता। जयपुर घराने में राग की बंदिश बहुत ही सौन्दर्यपूर्ण रीति से प्रस्तुत की जाती है। स्थाई एक या दो बार गायी जाती है। बंदिश चाहे कितनी ही बार गाई जाये उसके स्वरांग तथा तालांग में कण का फर्क भी नही आता। तंत्र अंग कीगायकी इसघराने की पूर्ण विशेषता है। एक स्वर से दूसरे स्वर पर जाते हुए दोनों स्वरों के मध्य की श्रुतियों को गले से स्पष्ट कहना, गले पर पूर्ण नियन्त्रण तथा अधिकार, पूरे दम सांस और तंत्र अंग के मार्मिक दृष्टिकोण के बिना तन्त्र अंग की गायकी प्रस्तुत करना सम्भव नही। ''घराने के प्रसिद्ध कलाकारों में उस्ताद अल्ला दिया खां साहब, उनके भाईउस्ताद हैदर खांसाहब तथा उनके पुत्र उस्ताद मन्जी खां तथा उस्ताद भूर्जी खां श्रेष्ठ कलाकार हुए है। उनकी शिष्य

परम्परा में मोधूबाई कुर्डीकर तथा केसर बाई केरकर, भास्कर बुवा बखले, गोविन्द बुवा शालिग्राम, गुल्लु भाई जसदन, पण्डित वामनराव सडोलीकर, पण्डित निवृश्रि बुवा सरनाइक, पण्डित मल्लिकार्जुन मंसूर, किशोरी अमोणकर इत्यादि प्रमुख है।''

म– किराना घरानाः–

''किराना घराना स्वर प्रधान गायकी का प्रतिनिधित्व करता है। अधिकतर लोग स्वर्गीय अब्दुल करीम खां साहब को इस घराने की गायकी का जन्मदाता और लोकप्रिय गायक मानते हैं। उन्होंनें ही लोगों के अनुसार इस घराने को स्थापित किया। उनके पहले शिष्यों में सुरेश बाबू माने, रामभाऊ, सवाई गंधर्व, गनपत बुआ बेहरे और हीराबाई बौदकर के नाम मुख्य रूप से जाने जाते हैं। तत्पश्चात शिष्य वर्ग में सवाई गंधर्व के शिष्य पण्डित भीमसेन जोशी,गंगू बाई हंगल तथा फिरोज दस्तूरी के नाम विशेष उल्लेखनीय है। परन्तु हिन्दुस्तानी संगीत के विद्वानों तथा विचारकों के अनुसार इस युग में किराया गायकी के अन्वेषक और सर्वश्रेष्ठ गायक उस्ताद बहरे वहीद खां साहब थे। उस्ताद अब्दुल वहीद खां साहब किराना घराने की गायकी की सबसे उत्तम व्याख्या करते थे। उनके प्रमुख शिष्यों में हीराबाई बडौदकर, उस्ताद शकूर खां, पण्डित जीवन लाल मट्टू, माधुरी भट्ट, बेगम अख्तर, फिरोज निजामि, सरस्वती राणे, पण्डित प्राणनाथ, सरदार त्रिलोचन सिंह, पण्डित रामनारायण, पार्श्व गायक मुहम्मद रफी, बशीर खां और रशीद अहमद खां प्रमुख है।''

''किराना घराना में सुरीलेपन, सुरीले गायन तथा भावुकता के साथ साथ मौलिक गायकी दृष्टि से प्रतिक्रिया की भावना है। ताल और लय का भी विशेष आनन्द इस लयकारी में नही आता। इस गायकी में स्वरों की चतुर उलट–पलट होती है परन्तु उनकी भावनात्मक व्याख्या नही होती। इस गायकी में मेरूदण्ड पर ही पूरा जोर दिया गया। जिसमें स्वरों की अति विचित्र उलट–पुलट होती है। इस उलट–पलट में गणित का क्रमचय होता है। जिससे गायक की बुद्धि की प्रखरता का अनुमान होता है। इस प्रकार की गायकी में रसात्मक अथवा भावात्मक आनन्द नही होता। इस दिमागी कसरत से रोमांच बिल्कुल नही आ पाता।'' '' किराना घराने के गायक ज्यादातर किराने के बाहर रहे। उस्ताद बन्दे अली खां देवास में, उस्ताद अब्दुल करीम खां बडौदा में, बम्बई मेंएवं मिरज में और उस्ताद वहीद खां बडौदा, मुम्बई एवं मिरज में, तथा उस्ताद अब्दुल वहीद खां लाहौर में रहे। फिर भी संगीतज्ञों की अमिट छवि कला प्रेमियों के दिल में बनी रहेगी।''

''किराया गायकी रोगी को शल्य क्रिया से पूर्व सुंघाई जाने वाली दवा थी। जिसके बाद में क्या होना है और क्या नही, इसकी फिक्र ही जाती रही। केवल स्वर की करामात से मैं आपको मुग्ध कर देता हूं। यही प्रतिज्ञा किराना घराने की बन गयी।''

प–पटियाला घरानाः–

यह घराना स्व0 बडे गुलाम अली खां साहब के कारण आज समस्त भारत में प्रसिद्ध है। पंजाब से ख्याल गायकी का प्रसार विभिन्न रियासतों में होता रहा। पटियाला, नाभा, कपूरथला के अन्य रियासतों में भी ख्याल गायकी को प्रश्रय मिला। सभी में शान शौकत की दृष्टि से पटियाला घराना प्रमुख रहा। दिल्ली दरबार के अधिकांश गायक इसी रियासत के आश्रय में आ गये।

पटियाला में महाराज नरेन्द्र सिंह का शासन था। दिल्ली के दरबारी कवि मिर्जा गालिब तथा दरबारी गायक तानरस खां इसी दरबार में रहे। इनके शिष्यों में कालू खां, अलीबख्श, नवीब बख्श और फतेहअली प्रमुख रहे है। अली बख्श और फतेह अली की जोडी अलिया–फत्तू के नाम से भारतवर्ष में प्रसिद्ध रही। यही परम्परा वर्तमान शताब्दी के प्रसिद्ध कलाकार उस्ताद बडे गुलाम अली तथा अमान अली नजाकत अली तक चली आती है। बडे गुलाम अली स्व0 फतेह अली के वंशज थे। उस्ताद बडे गुलाम अली खां साहब पहलेसारंगी वादक थे बाद में उत्कृष्ट ख्याल गायक के रूप में प्रसिद्ध हुए। इस घराने में दिल्ली, लखनऊ, ग्वालियर तथा जयपुर घरानों की विशेषताओं को एक ही जगह समेटा गया है। इस घराने के दो कलाकार अलिया फत्तू ने दिल्ली के तानरस खां के अतिरिक्त लखनऊ घराने के बडे अहमद खां तथा मुबारक अली, जयपुर के बहराम खां तथा ग्वालियर के हद्दू खां साहब से भी तालीम प्राप्त की थी। इस घराने की बंदिशें संक्षिप्त परन्तु कलापूर्ण है। इस शैली में द्रुत अलंकारित कण खटका युक्त लिया जाता है। गले की तैयारी पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है। टप्पा अंग की ठुमरी गायन में इस शैली के गायक विशेष महारत रखते है। इस घराने में तैयारी के साथ कोमलता भी है। गमक अंग तरानों की गायकी तथा अतिद्रुत लय में संचार करने वाली सपाट तानों से यह घराना अन्य घरानों से अलग ही दिखाई देता है। इसकी तानें, तोडेंऔर झाला इत्यादि अंग लय के अनुसार बंटते हैं। विलम्बित के तोड़े मध्य तथा द्रुतसे अलग–अलग ढांचे के होते हैं और तानों की बंदिशें तानों के अनुसार अलग–अलग होती है। अलिया–फत्तू की रची हुई ठुमरियां अपनी कोमलता, रसीलेपन तथा टप्पेवाली तानों के लिए आज भी संगीत संसार में

प्रसिद्ध है। उस्ताद बडे गुलाम अली खां का ठुमरी गायन इसी घराने का प्रतिनिधित्व करता है। पटियाला घराने में आवाज की पहुंच तीनों सप्तकों तक रखी जाती है तथा लयकारी का इस घराने में अत्यन्त प्रभाव है। इस घराने की गायकी में तान सौन्दर्य और तान चमत्कार विशिष्ट है। तानों में मींड, फन्देदार तान, सपाट तान तथा खण्डे मेरू की अद्वितीय तान की नकल की क्षमता है।''

1. ग्वालियर की संगीत परम्परा, डा0 अरूण बांगरे, पृ0 208
2. हमारा आधुनिक संगीत, डा0 सुशील कुमार चौबे, पृ0 223
3. संगीत बोध, डा0 शरद परांजये, पृ0 188
4. ग्वालियर की संगीत परम्परा, डा0 अरूण बांगरे, पृ0 257
5. हमारा आधुनिक संगीत, डा0 सुशील कुमार चौबे, पृ0 228
6. हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्रणाली, डा0 सुरेश गोपाल श्रीखण्डे,पृ0 12
7. भारतीय संगीत– एक ऐतिहासिक विश्लेषण, डा० स्वतंत्र शर्मा, पृष्ठ 210
8. हमारा आधुनिक संगीत, डा0 सुशील कुमार चौबे, पृ0 218, 219
9. हमारा आधुनिक संगीत, डा0 सुशील कुमार चौबे, पृ0 240–241
10. भारतीय संगीत– एक ऐतिहासिक विश्लेषण, डा० स्वतंत्र शर्मा, पृष्ठ 220, 221
11. घरानेदार गायकी, वामनहरि देशपाण्डे, पृ0 73
12. भारतीय संगीत– एक ऐतिहासिक विश्लेषण, डा० स्वतंत्र शर्मा, पृष्ठ 222

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-1, Issue-4, January 2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-January-2023/29

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

संदीप राणा

For publication of research paper title

ख्याल गायकी के प्रमुख घरानों का वर्णन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-01, Issue-04, Month January, Year-2023.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com